'जी जैसी आपकी मर्जी' नाटक में अभिव्यक्त नारी जीवन की समस्याएं

देवानंद यादव
शोधार्थी,हिंदी विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक, मध्य प्रदेश मो. 9623690981

शोध सारांश :-

वर्तमान नारी का जीवन कई समस्याओं से घिरा हुआ है । लड़की मां के गर्भ में होती है तो भ्रूणहत्या की समस्या से उसे जूझना पड़ता है। लड़की के रूप में पैदा होने पर समाज में लिंगभेद की समस्या का सामना करना पड़ता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुत्र को उत्तराधिकार के रूप में मान्यता प्राप्त है, परंतु स्त्री को यह अधिकार प्राप्त नहीं है। इसलिए समाज के लोग पुत्र की कामना में स्त्री की भ्रूणहत्या करने से पीछे नहीं हटते और अगर स्त्री जन्म भी ले लेती है, तो उसे उपेक्षित जीवन का ही शिकार होना पड़ता है। समाज में दहेज की प्रथा एक गंभीर समस्या है। जिसके कारण लोग लड़की को बोझ समझने लगते हैं और उसका जल्द-से-जल्द विवाह करके उससे छुटकारा पाना चाहते हैं। इसलिए लोग अयोग्य वर को भी अपनी लड़की ब्याह कर दहेज के बोझ से अपने आप को मुक्त कर लेते हैं । स्त्री की सुरक्षा का प्रश्न यह सदियों से चला आ रहा है। वर्तमान समय में स्त्री अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती है। उसके साथ यौन उत्पीड़न एवं बलात्कार की समस्या अक्सर देखने को मिलती है। जिससे न केवल उसको शारीरिक अपितु मानसिक पीड़ा का भी सामना करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन की समस्या वर्तमान समय में स्त्री जीवन को बहुत परेशानी और तनावग्रस्त में डालती है। इसके अतिरिक्त दांपत्य जीवन में विघटन, सास-ननद द्वारा प्रताड़ना, बच्चे न पैदा होने पर बाँझ का लांछन और केवल लड़की पैदा होने पर उसे ही दोषी ठहराया जाता है । इस तरह स्त्री जीवन कई समस्याओं से घिरा हुआ है। जिसका चित्रण नादिरा जहीर बब्बर ने अपने नाटक 'जी जैसी आपकी मर्जी' के माध्यम से किया है ।

बीज शब्द :- स्त्री जीवन, नारी जीवन की समस्या, हिंदी महिला नाट्य लेखन, स्त्री विमर्श, 'जी जैसी आपकी मर्जी' नाटक, हिंदी नाटक।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है। इसमें स्त्रियों को हमेशा दोयम दर्जे का ही स्थान दिया जाता है। ऐसे में पुरुष प्रधान समाज होने के कारण भारतीय समाज में महिलाओं को गौण स्थान ही दिया जाता है। भारतीय समाज का इतिहास बहुत पुराना है। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा एवं वेदपाठ का पूर्ण अधिकार था परंतु जैसे-जैसे समय बदलता गया, उनके ऊपर कई बंधन डालना आरंभ कर दिया गया। मध्यकाल आते-आते उनके ऊपर कई प्रतिबंध लगाए गए। उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया एवं उनकी पूर्ण स्वतंत्रता छीन ली गई। उन्हें घर की चहारदीवारी में रहकर काम करने के लिए मजबूर किया गया। उन्हें कई कुप्रथाओं का भी सामना करना पड़ा, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह निषेध आदि। मध्यकाल में महिलाओं के साथ जबरदस्ती अपहरण करके उनका बलात्कार करना, उनसे विवाह करना यह आम बात हो गई । डॉ नगेंद्र द्वारा संपादित पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में नारी की स्थिति के संदर्भ में लिखा गया है - **"नारी को अपनी संपत्ति मानकर ही उसका भोग इनके जीवन का मूल मंत्र हो गया। विलास के उपकरणों की खोज और उनका संग्रह तथा सुरा-सुंदरी की आराधना अभिजात वर्ग का शगल था और मध्यम तथा निम्न वर्ग के लोगों में उसका बोलबाला उसके अनुकरण के कारण था । किसी की कन्या का अपहरण अभिजात वर्ग के लोगों के लिए साधारण बात थी। कदाचित् इसीलिए अल्पायु में लड़कियों का विवाह अधिक प्रचलित हो गया था ।... अतएव लड़कियों के साथ छेड़छाड़, तीतर- बटेर पालना और उन्हें लड़ाना शहजादों और राजकुमारों की दिन चर्या बन गई थी।"**[1]

ऐसी विकट परिस्थिति में महिलाओं की स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि मध्यकाल महिलाओं के लिए कितना दयनीय रहा। आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार देखने को मिला। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह को लेकर कानून बनाए गए। कुछ समाज सुधारकों ने भी स्त्री शिक्षा एवं स्त्री के सुधार के लिए कार्य किए हैं। जिससे उनकी स्थिति में सुधार देखने को मिला। 'जी जैसी आपकी मर्जी' नाटक में नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थ वर्णन देखने को मिलता है । नारी जीवन की समस्याओं को दो भागों में बांट कर देख सकते हैं- विवाह पूर्व नारी जीवन की समस्या और विवाह उपरांत नारी जीवन की समस्या ।

1.विवाह पूर्व नारी जीवन की समस्या: -

भ्रूण हत्या एवं लिंग भेद की समस्या:- नाटककार नादिरा जहीर बब्बर ने अपने नाटक 'जी जैसी आपकी मर्जी' में चार पात्रों के माध्यम से समाज की सामाजिक विषमता और स्त्रियों के ऊपर हो रहे अन्याय और अत्याचार का वर्णन किया है। नाटक का शुरुआत कठपुतली के नर्तन से होता है, जो कि एक प्रतीक है। नाटक के चारों पात्र दीपा, वर्षा, सुल्ताना और बबली यह चारों के चारों पात्र प्रतीक के रूप में हमारे सामने आते हैं। जो कि हमारे समाज में विभिन्न धर्मों, जातियों एवं प्रांतों में रहने वाली स्त्रियों की प्रतीक है ।स्त्री किसी भी धर्म, किसी भी जाति या किसी भी प्रांत की रहने वाली क्यों न हो परंतु उसमें एक समानता है, वह स्त्री होने का। उनके ऊपर जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं वह सभी एक समान है। डॉ दीपा कुचेकर के अनुसार **"जिंदगी भर स्त्री पुरुषों के इशारों पर ही नाचती रहती है। उसके हाथ-पांव मुंह बंधे हुए होते हैं। वह कान होकर सुन नहीं सकती, आंखें होकर देख नहीं सकती, मुंह में जबान होकर बोल नहीं सकती। पुरुष चाहे वह पिता के रूप में हो, भाई, पति या बेटे के रूप में हो। वह जो भी कहता है उसे चुपचाप देखना, जो कहता है उसे चुपचाप सुनना और मुँह का प्रयोग केवल दो वक्त की रोटी खाने के लिए करना, बोलने के लिए नहीं। ऐसी जीती जागती कठपुतलियां स्त्री बन जाती है। नाटक के पात्र दीपा, वर्षा, सुल्ताना और बबली अंत में कठपुतलियों के रूप में मंच पर उपस्थित होती है।"**[2] नाटक के आरंभ में मंच पर दीपा स्कूल ड्रेस पहने हुए टापू खेलती हुई नजर आती है। इसमें उसके द्वारा एक गीत गाया जाता है जो इस प्रकार है।

"अक्कड़ बक्कड़ बंबे बोल/अस्सी नब्बे पूरे सौ
पाव रोटी बिस्कुट/भैया खाए कुट कुट
बहिने देखे टुक टुक/दादी बोले वेरी गुड" [3]

नाटक के आरंभ में दीपा के द्वारा गाए हुए इस गीत के माध्यम से यह स्पष्ट पता चलता है कि समाज में किस प्रकार सामाजिक विषमता दिखाई देती है। बेटे को खाने के लिए बिस्कुट दिए जाते हैं और बेटी को केवल टुकटुक देखना होता है। यही समाज में फैले हुए सामाजिक लिंगभेद को लेखिका ने उठाया है कि किस प्रकार दीपा नाटक में सामाजिक विषमता का शिकार होती है।

दीपा जब तीन महीने की अपनी मां के गर्भ में थी, तो उसके पिताजी उसकी माता को लेकर अस्पताल गए थे। यह चेक कराने के लिए कि वह लड़का है या लड़की। यह पता चलने पर कि गर्भ में लड़की है तो दीपा की दादी कहती है कि **"क्यों अपने सर पर बोझ बढ़ा रहा है रामशरण? मैं तो कहती हूं गिरवा दे इस लड़की को।"**[4] पिताजी डॉक्टर के पास गए और उसे गर्भपात कराने के लिए कहा, परंतु डॉक्टर ने गर्भपात करने से इंकार कर दिया। दीपा के परिवार वाले लड़की नहीं चाहते थे। लड़का चाहते थे, क्योंकि दीपा की दो बहने और एक भाई पहले से थे। दीपा के पिता रामशरण रेलवे में लोकोमैन का काम करते थे। वहीं पर उनके रेलवे कॉलोनी थी। उसी के पास रेलवे क्वार्टर में रहते थे। वहीं पर कंपनी के पास एक बाग था। जहां पर बच्चे खेलने के लिए जाते थे। परंतु दीपा और दीपा की दोनों बहने बाग में खेलने नही जा सकती थी, क्योंकि घर का सारा काम इन्हें ही करना पड़ता है। झाड़ लगाना, कपड़े धोना, बर्तन मांजने और मां रसोई के लिए सौदा लाती थी और रसोई का काम करती थी।

दीपा का बड़ा भाई घर का कोई काम नहीं करता था। वह लड़का था। इस कारण वह रात को देर से घर को लौट सकता था। सिनेमा देखकर लौटता तो गाना गाते हुए आता और दादी तुरंत कहती कि दीपा पानी ला कर दे। एक दिन दीपा घर का सारा काम करके थक चुकी थी और पढ़ने के लिए बैठी थी, क्योंकि उसका स्कूल में टेस्ट था। दादी के कहने पर उसने पानी लाकर नहीं दिया। **"मैंने कहा भैया अपने आप पानी नहीं पी सकते? यह सुनकर भैया ने मुझे जोर से थप्पड़ मारा और कहां ढीठ हो गई है ढीठ, एक दिन जमकर धुलाई कर दूंगा ना फिर दिमाग ठिकाने आ जाएगा। अंदर से बाबूजी चिल्लाते हुए बोले, इसे आज ठीक कर ही दे बिटवा... यह सुनकर भैया मुझे और मारने लगे।"**[5] बाद में पिताजी चिल्लाते हुए अंदर से आए और दीपा को घसीटते हुए ले जाकर अंधेरी स्टोर में बंद कर दिया। दीपा खूब रोई, चिल्लाई परंतु उसे किसी ने बाहर नहीं निकाला। उसे अगले दिन जब उसकी बड़ी बहन ने कहा कि दीपा को स्कूल जाना है तब पिता ने निकालने की अनुमति दी।

इस नाटक में दिखाया गया है कि दीपा की बुआ चंद्रमाला जब अपने चारों बच्चों के साथ छुट्टियों में आती है तो उसका बहुत मान सम्मान होता है, क्योंकि उसके सारे बच्चे लड़के हैं। दीपा स्कूल में शहीदी दिवस के फंक्शन में नाटक में अभिनय करती है। अभिनय में झांसी की रानी की भूमिका निभाती है। जिसके लिए उसे फर्स्ट प्राइज़ दिया जाता है। स्कूल की प्रिंसिपल दीपा की माँ से दीपा के तीनों बहनों की काफी तारीफ करती हैं और दीपा की खासकर। वह कहती हैं कि वह चाहे तो दीपा को स्कॉलरशिप मिल सकता है। दीपा उसकी दोनों बहनों को साल में केवल एक बार कपड़े आते हैं। वह भी रास्ते पर की दुकानों से और उसके भाई के लिए महंगे बड़े दुकान से कपड़े आते हैं। दीपा के भाई का बर्थडे धूमधाम से मनाया जाता है परंतु दीपा और उनकी बहनों के लिए कुछ भी ऐसा नहीं किया जाता। एक बार दीपा की बड़ी बहन दुर्गा बीमार पड़ती है उसे पीलिया हो जाता है परंतु परिवार वाले उसे कहीं पर भी डॉक्टर को नहीं दिखाते। उसकी हालत बिगड़ती है तब पड़ोसी कहते हैं .कि उसे रेलवे अस्पताल में ही भर्ती करवा दो। उसे देखने के लिए अस्पताल में कोई नहीं जाता। केवल माँ ही जाती है। वहां पर दुर्गा दीदी की मौत हो जाती है। दीपा के भाई को थोड़ा सा भी सर्दी जुखाम होने पर तुरंत कानपुर बड़े अस्पताल में ले जाया जाता है। परंतु दीदी के मर जाने पर भी कोई व्यवस्था नहीं की जाती। मरने का दुख केवल दीपा और उसकी बहन एवं माँ को ही हैं।

परिवार को इस की मौत से कोई फर्क नहीं पड़ता है। दीपा करती है **"मैं हमेशा सोचती हूं ऐसा क्यों होता है? क्यों अम्मा को मार पड़ती है? क्यों हम बहनों को मार पड़ती है? क्यों भैया इंग्लिश मीडियम में और हम बहिने हिंदी मीडियम में...? भैया को दो-दो ट्यूशन फिर भी घिसट-घिसट के पास होता है.. हम बिना ट्यूशन के स्कॉलरशिप लाते हैं। फिर भी क्यों नहीं प्यार करते हमें... क्यों नहीं प्यार करते हमें सब लोग...? क्या बुराई है हममें, हमें भी तो प्यार चाहिए न....?"**[6] नाटक में दीपा के माध्यम से लिंग-भेद जैसी सामाजिक समस्या को चित्रित किया गया है। प्रेमी प्रेमिका संबंध (प्रेम का बदलता रूप)- 'जी जैसी आपकी मर्जी' नाटक में वर्षा पोटे माटुंगा मुंबई में रहने वाली एक लड़की है। जिसके पिता रामदास पोते की कपड़ों की एक छोटी सी दुकान है। वर्षा को एक गुजराती लड़के जिग्नेश से प्यार हो जाता है परंतु जब वर्षा उसे कमिटमेंट की बात करती है, तो वह टॉपिक बदल देता है| दो साल तक उनके बीच में लव अफेयर चलते हैं| उसके बाद जब वर्षा उससे पूछती है **"देख जिग्नेश अगर तू अब मुझसे शादी का Commitment नहीं करेगा तो टा टा... बाय बाय..!"**[7] इस पर जिग्नेश शादी से इनकार करते हुए वर्षा से कहता है – **"ए वर्षा I also wanted to talk to you, क्या है कि अभी तमेरा ने मेरा, क्या है मैं मेरे फैमिली का Only son तो फैमिली बिजनेस भी मुझे ही संभालना है ना, फिर मेरे मम्मी पापा ने भी मुझे कह दिया कि कम्युनिटी के बाहर शादी नहीं करने का, तो मैं अपने मम्मी पापा के Against तो नहीं जा सकता ना।"**[8] जिग्नेश प्रेम के नाम पर वर्षा से अपनी कामवासना की तृप्ति करना चाहता था, वह उससे सच्चा प्रेम नहीं करता था। वर्षा कहती है कि **"Bullshit Community के बाहर की लड़कियों को घुमाना चाहते हो, उनके साथ सोना चाहते हो, तब मम्मी पापा से पूछा था? किस चीज में मॉडर्न होते हैं यह लोग? विचारों से... जिंदगी की जो बुनियादी चीजें हैं, मान्यताएं हैं, उनमें? नहीं सिर्फ कपड़ों में, सिगरेट में, शराब में, फ्री सेक्स में।"**[9] आधुनिक युग में प्रेम के बदलते हुए रूप को लेखिका ने दिखाया है। वर्तमान समय में कुछ समय के आकर्षण को ही लोग प्रेम समझ लेते हैं। यह प्रेम नहीं बल्कि क्षण भर का प्रेमासक्ति (प्रेम में आसक्त होने की अवस्था या भाव) है, केवल वासना भर है।

2.विवाह उपरांत नारी जीवन की समस्या: –

पति पत्नी संबंध:– 'जी जैसी आपकी मर्जी' नाटक की दूसरी पात्र वर्षा है। वर्षा के घर में उसकी बड़ी शोभा काकू है। जिनके पति अमेरिका शेट्टी फैमिली के उडिपी रेस्टोरेंट में मैनेजमेंट के लिए शोभा काकू को भारत में छोड़कर जाते हैं। जाते समय काका शोभा काकू से कहते हैं- **"शोभा मैं जाऊं न, तुझे भी जल्द वहां बुला लूंगा।"**[10] परंतु वहां जाने के बाद ही शेट्टी फैमिली के किसी लड़की से वह विवाह कर लेते हैं| और 15 -16 वर्ष बाद जब वह लौटते हैं, अपने बच्चों को भारत में इंडिया घुमाने और ताजमहल दिखाने के लिए। शोभा काकू उनसे मिलने के लिए आतुर होती है, परंतु वह शोभा काकू से मिलना नहीं चाहते और बिना मिले ही चले जाते हैं। शोभा काकू को जब पता चलता है कि उनके पति इंडिया आए हुए हैं, तो वह उनसे मिलना चाहती है। वह बहुत रोती है, कहती हैं- **"पाँच मिनट के लिए मुझे मिला दो उनसे, मैं कुछ पूछना चाहती हूं।"**[11] शोभा काकू के इतने दिनों का धैर्य टूट जाता है

वह निराश हो जाती है और अपने दोनों हाथों के नस को काटकर आत्महत्या कर देती हैं । वर्षा कहती है-**"काकू ने अपने दोनों हाथों की नसों को ब्लेड से काट कर आत्महत्या कर ली थी। उनका पूरा बिस्तर खून से लाल हो गया था। उनके तकिए के नीचे एक पर्ची मिली काका के नाम, उनकी अंतिम इच्छा थी कि वो आकर उनको अग्नि दे। अभी भी सोचती हो तो मेरा खून खौल उठता है। क्यों ऐसा होता है कि हम लोगों को जो पांव की जूती भी नहीं समझते उनके लिए अपनी जान दे देते हैं। क्यों हमें बचपन से कुट -कुट कर ये सिखाया जाता है कि पति जैसा भी हो एडजस्ट करो, क्योंकि अपने पति को सुखी रखने में ही हमारी सबसे बड़ी कामयाबी है। और हमारा सुख, हमारी आशाएं, हमारे सपने, उनका क्या ?"** [12]

यौन विकृति एवं बलात्कार की समस्या: - 'जी जैसी आपकी मर्जी' में नाटक की पात्र सुल्ताना का विवाह बारह- तेरह वर्ष की अवस्था में हो जाता है। उसके पति का नाम अकील था। एक दिन दोपहर के समय घर में कोई न होने पर अकील अपनी बारह- तेरह वर्ष की छोटी उम्र की बीवी के साथ बलात्कार करता है। सुल्ताना बहुत रोती चिल्लाती है परंतु उसका कोई नहीं सुनता। बाद में सुल्ताना की सांस जब आती है तो वह उसकी हालत को देखकर कहती है कि आज नहीं तो कल यह तो होना ही था। अब रो मत, अब चुपचाप घर का काम कर। सुल्ताना को चार बार बेटी पैदा होने के बाद उसका पति अकील उसको तलाक दे देता है। बाद में वह अपने मायके चली जाती है। वहां पर हकीम साहब की बुरी नजर उसके ऊपर पड़ती है और वह उसके भाइयों को बहला-फुसलाकर सुल्ताना से निकाह कर लेता है। निकाह के बाद वह उससे और उसकी बेटियों से घर के सारे काम करवाता है और औषधियां कुटवाता पिसवाता । सुल्ताना अपनी बच्ची का फीस भरने के लिए स्कूल जा रही थी कि अचानक रास्ते से लौटकर घर आई। **"घर पहुंची तो पूरा घर खाली। सोच रही थी कि सबीहा और हकीम साहब कहां गए कि अचानक बाथरूम से लोटा गिरने की आवाज आई। तेजी से बाथरूम की तरफ दौड़ी दरवाजे को धक्का मार के खोला। तो क्या देखती हूँ कि सबीहा बाथरूम में फर्श पर पड़ी हुई है, पूरी नंगी, मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ और वो हकीम नंगा मेरी बेटी पर चढ़ा हुआ था।"**[13] नाटक में हकीम अपनी ही बेटी के साथ बलात्कार करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप सुल्ताना उसका खून कर देती है।

पति का बाहर नाजायज संबंध:- नादिरा बब्बर का नाटक 'जी जैसी आपकी मर्जी' में बबली का विवाह एम.बी.ए. पास अमरदीप कोहली से होता है। जो कि दिल्ली में बड़ी कंपनी में बड़ी पोस्ट पर है। वह खुद को माचो मैन समझता है और बबली के साथ शारीरिक संबंध से संतुष्ट नहीं होता है। वह बबली से कहता है **"या बबली तुम्हारे साथ सेक्स करना ऐसा जैसे किसी मरी हुई मछली के साथ No Satisfaction what so ever."**[14] बबली पति के प्रमोशन से खुश है और वह मां बनने वाली है।यह बात वह अपने पति को फोन पर बताने के लिए रिसीवर उठाती है तो फोन पर अमन और अनीता जो कि अमन के बॉस की बीवी है। दोनों के अफेयर की बात सुनती है। उसे इस घर से, घर के हर चीज से, अमन से नफरत होने लगती है पर फिर विदाई के समय मां की बात याद आती है- **"बबली पुत्तल अपने हस्बैंड को हर हाल में खुश रखना।"**[15] बबली को उसकी माँ ने ही ऐसा संस्कार दिया है कि पुरुष जैसा भी हो, जो भी करे परन्तु बबली को उसे खुश रखने का प्रयास करना है। **"नाटककार ने स्त्री की विभिन्न दशा को नाटक द्वारा प्रस्तुत किया है। दीपा, वर्षा, सुल्ताना, बबली क्रमशः बच्ची, युवती और प्रौढ़ा है । बच्ची से शुरू होती दास्तान आगे बढ़ती जाती है। बचपन से युवावस्था, युवावस्था से प्रौढावस्था में यह त्रासदी के बढ़ती जाने की क्रिया को बड़े सुंदर ढंग से पिरोया है। स्त्री चाहे अनपढ़ घर की हो या पढ़े- लिखे घर की वह चाहे हिंदू हो, मुस्लिम हो या सिख- ईसाई हो, वह खुद पढ़ी- लिखी हो या अनपढ़ हो उसे हर हाल में पुरुष वर्चस्व में ही जीना पड़ता है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक उस पर संस्कार ही कुछ ऐसे किए जाते हैं कि वह केवल त्यागमयी, लाचार अस्तित्व विहीन बनाई जाती है ।"**[16]

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दीपा, वर्षा, सुल्ताना और बबली चारों ही पात्र स्त्री जीवन के विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं । दीपा के माध्यम से लिंग भेद एवं भ्रूण हत्या की समस्या को दिखाया गया है। वर्षा के माध्यम से आधुनिक युग में प्रेम के नाम पर वासना की पूर्ति की समस्या, सुल्ताना के माध्यम से बाल विवाह एवं बलात्कार की समस्या, बबली के माध्यम से यौन असंतुष्टि तथा लव अफेयर्स की समस्या को चित्रित किया गया है ।

****

संदर्भ:-

1. डॉ. नगेंद्र; (2017), हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 263
2. कुचेकर, डॉ. दीपा;हिंदी नाट्य साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ संख्या –140
3. बब्बर, नादिरा जहीर; (2020), जी जैसी आपकी मर्जी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-11
4. वही पृष्ठ संख्या-12
5. वही, पृष्ठ संख्या-15
6. वही, पृष्ठ संख्या-19
7. वही, पृष्ठ संख्या 24
8. वही, पृष्ठ संख्या 24
9. वही, पृष्ठ संख्या 25
10. वही , पृष्ठ संख्या 20
11. वही, पृष्ठ संख्या 23
12. वही, पृष्ठ संख्या 24
13. वही, पृष्ठ संख्या -34
14. वही, पृष्ठ संख्या -38
15. वही, पृष्ठ संख्या -42
16. कुचेकर, डॉ. दीपा; (2012), हिंदी नाट्य साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ संख्या 147